वैश्वीकरण भारतीय संस्कृति एवं समाज: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

शोध पत्र-समाजशास्त्र

* डॉ. मनोज कुमार तोमर

वर्तमान में वैश्वीकरण निरन्तर वार्तालाप, वाद–विवाद एवम संगोष्ठियों को विषय बनता जा रहा है। वैश्वीकरण के अन्तर्गत वह सब कुछ विश्लेषित किया जाता है जो सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है लेकिन समाजशास्त्र में वैश्वीकरण को हम संस्कृति के बारे में समझते है, जहाँ इसका अर्थ वेश्विक संस्कृति के रूप लिया जाता है अर्थात जब एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के से मिलकर परसंस्कृति ग्रहण नहीं करती बल्कि विश्व की समस्त संस्कृति अपने आप सात्मीकृत (Assimilate) होकर इस प्रकार प्रकट होती है कि कहाँ कौनसा किस समाज विशेष का तत्व मौजूद है इसका निर्धारण करना सरल नहीं होता। सामान्यतः वैश्वीकरण अर्थिक निर्भरता की विश्व व्यवस्था के सन्दर्भ में माना जाता है तथा इस विचारधारा को मानने वाले अधिकतर विचारक का मत है कि सांस्कृतिक वैश्वीकरण, आर्थिक वैश्वीकरण ही परिणाम है, परन्तु वैश्वीकरण समाजशास्त्र के अन्तर्गत केवल अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का समाजशास्त्र मात्र नहीं है। यदि हम Human Development Report (1999) पर दृष्टिपात करते है तब भी इसे केवल आर्थिक आधार पर ही समझ पाते या दूसरे शब्दों में यह रिर्पोट भी इसके आर्थिक पक्ष को दर्शाती है इसके अनुसार वैश्वीकरण को हम चार विशेषताओं के रूप या चार आधार पर समझ सकते है।

1. **नया बाजार** – जिसको हम ग्लोबल मार्केट कहते है।
2. **नए उपकरण** – जिसके संचार के समस्त आधुनिक उपकरण जैसे, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि आते है।
3. **नए कर्ता** (New Actor) – जैसे W.T.O, NGO, MNC, IMF जैसे संगठन है।
4. **नए नियम** – अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार नियम, वेटेन्ट कानून आदि।

आर्थिक आधार पर विश्लेषण करते हुए यह रिपोर्ट नई प्रौद्योगिकी, नवीन मीडिया चैनल एवम् विश्व अर्थव्यवस्था के नाम लाखों लोगों को रोजगार की वकालत करती है। परन्तु समाजशास्त्रीय का दृष्टिकोण वैश्वीकरण को आर्थिक आधार पर समझने में नहीं है। समाजशास्त्री इसे सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में समझते है। प्रो. योगेन्द्र सिंह ने सन् 2000 में Cultural Change in India, Idontity and Globlization नामक पुस्तक ने भारतीय समाजशास्त्रीयों की जिज्ञासा इस क्षेत्र में बढ़ा दी है, और वैश्वीकरण को सांस्कृतिक बहुलवाद के पर्याय के रूप में समझने की भूल करने लगे। जिसका अर्थ है कि ''जब किसी समाज में एकाधिक संस्कृति के लोग साथ–साथ रहते है तथा उनके इस प्रकार के सहअस्तित्व का समर्थन नहीं किया जाता है तथा संस्कृति अपने आप में संस्कृति विशेष न रहकर विश्व संस्कृति का रूप ले लेती है उसे सांस्कृतिक वैश्वीकरण कहा जाता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने एक दौधारी तलवार के समान कार्य किया एक तरफ जहाँ इस प्रक्रिया ने इस संस्कृति से दूसरी संस्कृति को मिलकर समझने व उसके उपयोगी तत्वों को परसंस्कृतिग्रहण (Acalturation) के द्वारा ग्रहण करने में सहायता प्रदान की दूसरी तरफ अपनी स्वयं की संस्कृति पर विलुप्त होने के बादल मंडराने का भय पैदा किया।

जिसका वर्णन प्रो. योगन्द्र सिंह ने भी किया है तथा विश्व संस्कृति एवम् लोक संस्कृति में तार्किकता व अस्तित्व का विवाद पैदा कर दिया। अर्थात् सरल शब्दों में कहा जाए तो वैश्वीकरण को हम आर्थिक व सामाजिक आधार पर समझ सकते है जहाँ एक तरफ मुक्त अर्थवस्था सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार के रूप में देखती है जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व नवीन आर्थिक कानूनों पर निर्भर है तथा दूसरी तरफ सामाजिक आधार पर जहां लोक संस्कृति (Folk Culture) के स्थान पर विश्व संस्कृति अपने नए मानदण्डो के साथ विराजमान है।

भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव जानने के लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम भारतीय सामाजिक संरचना को समझे। अधिकांश समाजशास्त्री मानते है कि भारतीय समाज का सामाजिक जीवन दो ग्रामीण एवम् नगरीय भागो में विभक्त है तथापि ये भाग अन्तक्रियायी है, फिर भी एक दूसरे से पर्याप्त रूप से अलग है, तब जाहिर है कि वैश्वीकरण का प्रभाव भी ग्रामीण व नगरीय जीवन पर अलग–अलग तरह से ही प्रभाव डालेगा। प्रो. सी.सी. जिमरमेन व पी.ए. सोरोकिन ने व्यवसाय, पर्यावरण, समुदाय का आकार, सजातियता, सामाजीकरण, स्तरीकरण, गतिशीलता व प्रवजन व सामाजिक अन्तक्रिया पद्धति के आधार पर ग्रामीण व नगरीय जीवन में अन्तर किया है, तथा ये ही वो सब विशेषताएँ या प्रमुख बिन्दु है जिसके आधार पर हम वैश्वीकरण के प्रभावों को दोनों स्तर पर अलग–अलग समझ सकते है। यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि नगरीय जीवन व्यवसाय के स्तर पर व्यापार एवम् ग्रामीण समाज कृषि के आधार पर समझा जाता है। वैश्वीकरण जो विश्व व्यापार की बात कहता है नगरों में आसानी से अपना प्रभाव दिखाता है जिसके परिणामस्वरूप आज हम M.N.C. को व्यापार में बढ़ता देख रहे है हमारी अपनी निजी एवम् सार्वजनिक क्षेत्र की ईकाईया या तो बन्द हो गई या फिर सरकारी अनुदान के आधार पर सैकड़ों हजारों करोड़ के घाटे में जल रही है।

यहीं स्थिति गांवों में कृषि के सन्दर्भ में भी है। हमारे देश में किसान आज भी अशिक्षित व कम जौत (Low Land Holding) के साथ अपना जीवन यापन कर रहा है। परन्तु यहाँ कुछ नवीन भूस्वामी जो शिक्षा व बड़ी जौत के साथ नवीन प्रौद्योगिकी का उपयोग कर कृषि को एक नवीन दिशा दे रहे है जिसके अन्तर्गत औषधिय कृषि, फलोत्पादन

*प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सवाई माधोपुर, राजस्थान

(Oloriculture) पुष्पोत्पादन (Flowricuture) के माध्यम से अधिक से अधिक मुनाफा कमा कर ग्रामीण समाज में आर्थिक विषमता का एक नया रूप प्रस्तुत कर रहे। ऐसा नहीं है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि या उसके लक्ष्य परिवर्तित नहीं हुए है, ग्रामीण उत्पादन आज नगर की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बन गया, परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था वृहद नगरीय औद्योगिकरण व्यवस्था का अंग भी बनती जा रही है नए व्यवसाय व उद्योगों का विस्तार तो हुआ परन्तु बन्द पड़े लघु एवम् कुटीर उद्योगों में रक्त संचार नहीं हुआ।

भारतीय ग्रामीण समाज में वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं पड़ता है। गाँव की नगर से दूरी, यातायात और संचार के साधनों की प्रकृति, निकटवर्ती नगरीय या औद्योगिक केन्द्र की प्रकृति, ग्रामीण समाज की भौतिक सामाजिक एवम् सांस्कृतिक विशेषताएँ आदि ऐसे कारक है जो ग्रामीण समुदाय पर वैश्वीकरण के प्रभाव को प्रभावित करते है। भारतीय सामाजिक जीवन पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा, जिसने हमारे सामाजिक सम्बन्धों, जीवन शैली एवम् उपभोग को नए आयाम दिये। एक तरफ विश्व संस्कृति का मोह हमारे युवा वर्ग पर इस कदर हावी हुआ कि हम अपने नातेदारी सम्बन्धों की सीमाओं के परिसीमन के बारे में सोचने पर विवश हो गये।

पति–पत्नि के सम्बन्ध माता–पिता के सम्बन्ध जिनमें समर्पण व त्याग की भावना को प्रमुखता दी जाती थी वहाँ पर अधिकारों की बात होने लगी। दादा–पोते के सम्बन्ध में सम्बन्धों को पुरानी पीढी व अनुपयोगी ज्ञान की दुहाई देकर दरकिनार कर दिया गया।

यहाँ एक तरफ यह सब हुआ तो दूसरी तरफ सहचरी Livein Realation व महिला मित्र जैसे कुछ नए सम्बन्धों से आत्मसात करते हुए समाज को देखा गया। कुछ अन्य प्रभाव हमारी जीवन शैली पर भी पड़े। हमारे रहन–सहन, खान–पान, एवम् सोच पर पड़े। थर्स्टन वेबलीन (1899) ने अपनी पुस्तक द थ्योरी आफ द लैजर क्लास में दर्शकीय उपयोग (Conspicous Consumption) नामक अवधारणा दी थी, जिसके जिन लोगों के पास निर्वाह स्तर से उपर अत्याधिक अतिरिक्त धन सम्पदा होती है वे उनका प्रयोग लोकोपयोगी अथवा रचनात्मक कार्यो की उपेक्षा ऐसे कार्यो में करते है जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठाा में वृद्धि हो। वे बहुमूल्य वस्तुओं का उपभोग दिखावें की भावना से प्रेरित होकर करते है न कि इनमें कोई आन्तरिक मूल्य विद्यमान होने के कारण।

वैश्वीकरण ने इस अवधारणा का प्रसार किया, जिसके आध ाार पर आज न केवल उच्च वर्ग बल्कि मध्यम वर्ग भी ब्रान्डेड कपड़े, महंगा मोबाइल, मंहगे रेस्टोरेन्ट में खाना, व फास्टफूड संस्कृति को अपनाने लगा, यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है जिससे मध्यम वर्ग को बैंकलॉन से अब डर नहीं लगता बल्कि ब्याज चुका कर विलासिता पर खर्च करना बैंक द्वारा दी गई सुविधा मात्र ही लगता है।

आधुनीकरण एवम् वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव महिला की स्थिति पर पड़ा, भारतीय परम्परागत समाज में जहाँ स्त्री को घर की चार दीवारी में कैद कर दिया था वहां वैश्वीकरण के कारण पनपी नई प्रौद्योगिकी ने महिलाओं के लिए अनेक नवीन रोजगारों का सृजन किया। विभिन्न कॉल सेन्टर, इन्टरनेट कैफे व उदधोषिकाओं जैसे कम शारीरिक श्रम लगने वाले विभिन्न पदों पर महिलाओं ने अपने पैर जमा लिए है।

विश्व पटल पर महिला की स्थिति को आज महिला, भारतीय समाज में महिला की स्थिति का आज महिला, भारतीय समाज में महिला की स्थिति से तुलना कर देखने लगी है जिसने जैण्डर संवेदनशीलता, फैमीनीज्म व मानवाधिकार जैसी कुछ अवधारणा पर भारतीय विचारकों को सोचने पर विवश किया है।

परन्तु यहां अगर हम ग्रामीण महिला की चर्चा नहीं करेंगे तो बात बेमानी होगी जिनके लिए आज भी उपरोक्त अवधारणाएं कोई प्रासांगिकता नहीं रखती है आज भी ग्रामीण महिला खेत, मजदूरी एवम् घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी के साथ–साथ निभा रही है। जिनके लिए वैश्वीकरण या अन्य किसी प्रक्रिया से अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उपरोक्त सम्पूर्ण विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण ने परिवार, विवाह, जीवन शैली, चिन्तन, सामाजिक जीवन एवम् आर्थिक जीवन को प्रभावित कर भारतीय समाज का एक नया ढाचा प्रस्तुत किया है जो परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना से बिल्कुल भिन्न है एवम् समाजशास्त्रीयों के लिए शोध का एक नया क्षेत्र है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Abrow, M and E King (Eds) 1990 : Globalisation Knowledge and Society Sage London, Albrow Martin 1996 : The Global Age : State and Society Beyond Mordenity, Polity Cambridge, Bauman Z 1998 : Globalization : The Human Consequences Polity Press Cambridge, Kofman E and Youngs G C Eds, Globalization 1996 : Thory and Practice, Pinter London, Ohrnal K 1990 : The Borderess World Collins London, Robertson, Roland 1992 : Globalization Sage Newbury Park, Stallings, B (Eds)1996 : Global Change and Regonal Rasbase, The New Internet Cafe of Development Cambridge University Press Cambridge, Sing Yagovdra 2002 : Mordanization of Indian Tradition Rawat Publication Jaipur and Delhi